ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १०१ –

ॐ वृषाकपये नमः

धर्म स्थापना हेतु वर्षा एवं वराह आदि विविध रूप लेने वाले को नमस्कार।

I salute the one who takes up multifarious roles like Rain & Boar etc. for Dharma

वृषरूपत्वात् कपिरूपत्वात् च वृषाकपिः अर्थात् वृष तथा कपि रूप होने के कारण भगवान् वृषाकपि हैं। समस्त कामनाओं की वर्षा करने के कारण धर्म को वृष कहते हैं। जगत् में धर्म की स्थापना हेतु पृथ्वी का जल में से उद्धार करने के लिए कपि अर्थात् वराह का रूप धारण किया था। अतः भगवान् धर्म और वराह कहे जाते हैं। उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १०२ -

ॐ अमेयात्मने नमः

असीम स्वरूप आत्मा को नमस्कार।

I salute the one who cannot be measured.

इयानिति मातुं परिच्छेत्तुं न शक्यते आत्मा यस्य इति अमेयात्मा अर्थात् जिनका स्वरूप 'इतना है' इस प्रकार नापा नहीं जा सकता वे भगवान् अमेयात्मा हैं। परमात्मा देश, काल और वस्तुओं की सीमाओं से परे हैं। अतः उन्हें किसी भी परिमाण से नापना असम्भव है। वे भगवान विष्णु ही अमेयात्मा हैं।

उन अमेय स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १०३ -

ॐ सर्वयोगविनिःसृताय नमः

समस्त सम्बन्धों में सुन्दरता से रहते हुए भी असंग रहने वाले प्रभु को नमन।

I salute the one who is free from all attachments with whom he has himself created.

सर्वयोग सर्वसम्बन्ध विनिर्गतः सर्वयोगविनिःसृतः अर्थात् सम्पूर्ण सम्बन्धों से रहित होने के कारण सर्वयोगविनिःसृत हैं। परमात्मा समस्त सृष्टि की उत्पत्ति व स्थिति करते हैं, तथापि वे अपनी ही सृष्टि से पूर्ण रूप से असंग भी रहते हैं जो अपनों से असंग रहता है वही उन स्वविनिःसृत सृष्टि के यथार्थ को जानता है। उन असंग एवं सर्वज्ञ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १०४ -

ॐ वसवे नमः

सब में वास करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one in whom all beings dwell.

वसति भूतानि यत्र इति वसुः अर्थात् भगवान् में सब बसते हैं, इसलिए वे वसु कहलाते हैं। जिस प्रकार समस्त लहरों की उत्पत्ति जल से होती है, उसीमें स्थित रहती है, तथा उसीमें लय को प्राप्त होती है, एवं समस्त लहरें जलतत्त्व में ही वास करती हैं। उसी प्रकार समस्त विश्व की उत्पत्ति, स्थिति एवं लय परमात्मा में ही होती है, इस प्रकार सब परमात्मा में ही वास करते हैं। अतः वे भगवान विष्णु ही वसु कहलाते हैं।

उन वसु रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १०५ -

ॐ वसुमनसे नमः

राग आदि दोषों से रहित को नमस्कार।

I salute the one who is supremely pure.

वसु प्राशस्त्यं, प्रशस्तं मनो यस्य स वसुमना अर्थात् वसु शब्द प्रशस्तता वा श्रेष्ठता के लिए प्रयोग होता है, अर्थात् जिनका मन श्रेष्ठ है वे भगवान् वसुमना हैं। परमात्मा राग-द्वेष रहित रहते हुए सृष्टि का संचालन करते हैं। समस्त जीवों को पक्षपात रहित उनके पाप-पुण्य आदि कर्म का फल प्रदान करते हैं। अतः वे भगवान रागादि मल से रहित अर्थात निष्पाप हैं।

उन वसुमना रूपा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १०६ –

ॐ सत्याय नमः

सत्य स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Transcendental

त्रिकाले अपि तिष्ठति इति सत्, सत् रूपत्वात् सत्यः अर्थात् जो तीनों कालों में स्थित रहते हैं, वह सत् है, परमात्मा सत् स्वरूप होने से सत्य हैं। परमात्मा भूत, भविष्य और वर्तमान इन तीनों कालों में स्थित हैं, क्योंकि काल की उत्पत्ति ही परमात्मा से हुई है। काल का जब अभाव था, तब भी परमात्मा का अस्तित्व था। इस प्रकार सत्य एक मात्र परमात्मा ही हैं।

उन सत्य स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १०७ –

ॐ समात्मने नमः

सबके प्रति सम रहने वाले को नमस्कार।

I salute the one who is equal to all.

सर्वभूतेषु सम आत्मा इति समात्मा अर्थात् समस्त भूतों में समान रूप से एक ही आत्मा की तरह स्थित होने से वे समात्मा हैं। दुनियां में कोई आस्तिक है और कोई नास्तिक, कोई ईश्वर की सेवा करता है और कोई उपेक्षाएं लेकिन ईश्वर सबको अपनी ही सन्तान की तरह समान अवसर एवं स्नेह देते हैं। वे ही सबकी आत्मा हैं, सबके मूल माता–पिता हैं। सबके प्रति सम रहने के कारण वे समात्मा कहलाते हैं।

उन समात्मा स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १०८ –

ॐ असम्मिताय नमः

किसी पदार्थ से सीमित नहीं रहनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is limitless.

सर्वैः अपरिच्छिन्नः अमितः इति असम्मितः अर्थात् परमात्मा किसी भी पदार्थ से परिच्छिन्न नहीं हैं अतः वे असम्मित हैं। जिस प्रकार जलतत्व एक लहर के नामरूप से सीमित प्रतीत होते हुए भी उनके जन्म आदि धर्म से सीमित नहीं होता है। उसी प्रकार परमात्मा सभी प्राणियों की सीमित उपाधि में सीमित प्रतीत होने के बावजूद उनके जन्म–नाश, विकार आदि धर्म से सीमित नहीं होते हैं।

उन असम्मित रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १०९ –

ॐ समाय नमः

सब कालों में समरूप से स्थित को नमस्कार।

I salute the one who is unpertubed at all times.

सर्वकालेषु सर्वविकाररहितत्वात् समः अर्थात् सब समय समस्त विकारों से रहित होने के कारण सम हैं। जिस समय देह आदि उपाधि का जन्म होता है, उसके उपरान्त वृद्धि आदि छ्ह विकार उनमें स्वाभाविक ही होते हैं। परमात्मा उन उपाधि के माध्यम से अभिव्यक्त होते हुए भी उनके जन्म आदि विकारों से रहित रहते हुए, सम रूप से स्थित रहते हैं।

उन सम स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ११० –

ॐ अमोघाय नमः

निश्चित रूप से फल देनेवाले को नमस्कार।

I salute the one whose worship will never go in vain.

पूजितः स्तुतः संस्मृतः वा सर्वफलं ददाति न वृथा करोति इति अमोघः अर्थात् पूजा, स्तुति अथवा स्मरण किये जाने पर सम्पूर्ण फल देते हैं, उन्हें वृथा नहीं करते, इसलिए परमात्मा अमोघ हैं। भक्त के सत्कर्म अथवा असत्कर्म कभी भी विफल नहीं होते हैं। उनका फल उन्हें अवश्य प्राप्त होता ही है। यह कर्म का मूलभूत एवं शाश्वत सिद्धान्त है, इस व्यवस्था को बनानेवाले स्वयं प्रभु है। अतः वे भी अमोघ कहलाए जाते हैं – उन अमोघ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १११ –

ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः

हृदय कमल में स्थित प्रभु को नमन।

I salute the one who resides in our Hearts.

हृदयस्थं पुण्डरीकम् अश्नुते व्याप्नोति तत्र उपलक्षितः इति पुण्डरीकाक्षः अर्थात् हृदयकमल में व्याप्त होने से उसमें लक्षित होते हैं, अतः वे पुण्डरीकाक्ष हैं। परमात्मा कण कण में अर्थात् सर्वत्र व्याप्त हैं, तथापि उनका दर्शन सब जगह नहीं होता है। उनका दर्शन केवल हृदय कमल में अपनी आत्मा की तरह से ही होता है। अतः वे भगवान विष्णु ही पुण्डरीकाक्ष हैं।

उन पुण्डरीकाक्ष रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ११२ –

ॐ वृषकर्मणे नमः

धर्मरूप कर्म के कर्ता को नमस्कार।

I salute the one who is always righteous.

धर्मलक्षणं कर्म अस्य इति वृषकर्मा अर्थात् जिनके कर्म धर्मरूप हैं वे भगवान वृषकर्मा हैं। पूर्णकाम परमात्मा का कोई भी कर्म किसी फल से प्रेरित तथा रागादि के वशीभूत होकर नहीं होता है। प्रत्येक युग में अवतरित होकर उन अवतार के माध्यम से किया हुआ, उन प्रत्येक कर्म के पीछे एक ही हेतु होता है; वह है धर्म की स्थापना। अतः वे भगवान विष्णु ही वृषकर्मा हैं।

उन वृषकर्मा रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ११३ –

ॐ वृषाकृतये नमः

धर्म हेतु शरीर धारण करनेवाले को नमन।

Pranams to the one who is an embodiment of Dharma.

धर्मार्थं आकृतिः शरीरं यस्य इति स वृषाकृतिः अर्थात् धर्म की स्थापना हेतु ही जिन्होंने शरीर धारण किया है, वे वृषाकृति है। प्रत्येक युग में भगवान धर्म की रक्षा हेतु अवतार लेते हैं। जब जब अधर्म से धर्म अभिभूत होता है, तब धर्म की संस्थापना हेतु स्वेच्छा से अपनी मायाशक्ति को वश में करके वे शरीर धारण करते हैं। वे भगवान विष्णु ही स्वयं वृषाकृति हैं। उन वृषाकृति रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ११४ –

ॐ रुद्राय नमः

सब को रूलानेवाले को नमस्कार।

I salute the one who makes all beings cry.

संहारकाले प्रजा संहरन् रोदयति इति रुद्रः अर्थात् प्रलयकाल में प्रजा का संहार करके रुलाते हैं। मृत्यु अथवा प्रलय एक अज्ञात अवस्था है। अज्ञात में जाने में सब को भय लगता है, तथा वह अपरिहार्य भी है। जीव यह बात नहीं समझ पाता है कि संहार सृजन की प्रक्रिया का एक अंग होता है। अतः जब प्रभु संहार करते हैं, तो अज्ञानियों में भय और दुःख की स्वाभाविक अभिव्यक्ति रुदन के रूप में होती है।

उन रुद्ररूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ११५ –

ॐ बहुशिरसे नमः

बहुत सिरवाले को नमस्कार।

I salute the one with innumerable heads.

बहूनि शिरांसि यस्य इति बहुशिराः अर्थात् बहुत से सिर होने के कारण भगवान् बहुशिरा हैं। उपनिषद् में परमात्मा के सुन्दर विराट् स्वरूप का वर्णन किया गया है। यह समस्त ब्रह्माण्ड परमात्मा का विराट् शरीर है। इसका अभिप्राय यह है कि परमात्मा स्वयं इस सृष्टि की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। इस प्रकार समस्त सिर परमात्मा के ही सिर है। पुरुष सूक्तम् में भी बताया गया कि 'सहस्रशीर्षा पुरुषः।' इस प्रकार भगवान विष्णु ही बहुशिरा हैं। उन विराट् स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ११६ -

ॐ बभ्रवे नमः

सबका भरण करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who takes care of the world.

बिभर्ति इति ब्रभ्रुः अर्थात् विश्व का भरण करते हैं, इसलिए परमात्मा बभ्रु हैं। सृष्टि की उत्पत्ति के उपरान्त उसे सुचारु रूप से संचालित करने तथा उसे टिकाए रखने के लिए व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार वे भगवान विष्णु सृष्टि का पोषण करते हैं। अतः वे ही भर्ता हैं।

उन सृष्टि का पोषण करनेवाने बभ्रु स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ११७ -

ॐ विश्वयोनये नमः

विश्व के कारणरूप प्रभु को नमन।

I salute the one who is the cause of this entire world.

विश्वस्य कारणत्वाद् विश्वयोनिः अर्थात् विश्व के कारण होने से विश्वयोनि हैं। विश्व की उत्पत्ति परमात्मा की मायाशक्ति से हुई है। किसी की भी शक्ति उससे पृथक नहीं होती है। मायाशक्ति को भी अस्तित्व और स्फूर्ति परमात्मा ही प्रदान करते हैं। अतः वे ही सृष्टि के मूल कारण हैं।

उन विश्वयोनि रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ११८ –

ॐ शुचिश्रवसे नमः

पवित्र नामवाले को नमस्कार।

I salute the one whose names & glories are very holy & purifying

शुचीनि श्रवांसि नामानि श्रवणीयानि अस्य इति शुचिश्रवाः अर्थात् भगवान के नाम का श्रवण पवित्र, सुनने योग्य है, इसलिए वे शुचिश्रवा कहे जाते हैं। प्रभु के प्रत्येक नाम का अर्थ उनकी महिमा से अवगत कराता है। उनकी महिमा से अवगत होते ही मन राग–द्वेष आदि अनेकों कलुषों से मुक्त होकर सात्विक होता जाता है। ईश्वर का प्रत्येक नाम मन को पावन करने का निमित्त बनता है। उन पवित्र नामवाले शुचिश्रवा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ११९ –

ॐ अमृताय नमः

मृत्यु से रहित को नमस्कार।

I salute the one who is Immortal.

न विद्यते मृतं मरणं यस्य सः अमृतः अर्थात् जिनका कभी मरण नहीं होता है वे अमृत हैं। जन्म और मृत्यु काल के अन्तर्गत के विकार है। परमात्मा काल से परे हैं, अतः उनकी मृत्यु भी नहीं है। उन अमृत स्वरूप परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करने पर ही अमृतत्व की प्राप्ति होती है। वे भगवान विष्णु ही अमृत स्वरूप हैं।

उन अमृतस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १२० –

ॐ शाश्वतस्थाणवे नमः

स्थिर और शाश्वत को नमस्कार।

I salute the one who is eternal & firmly etablished.

शाश्वतः च असौ स्थाणुः च इति अर्थात् शाश्वत भी हैं, और स्थिर भी हैं इसलिए भगवान् का एक नाम शाश्वत–स्थाणु हैं। परमात्मा शाश्वतस्वरूप अर्थात् सदैव, तीनों कालों में रहते हैं, तथा काल से परे भी हैं। वे सदैव परिवर्तन रहित, समानरूप से स्थित हैं, अतः वे स्थाणु भी हैं। एवं भगवान विष्णु ही शाश्वतस्थाणु हैं। उन शाश्वतस्थाणु स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १२१ –

ॐ वरारोहाय नमः

सर्वश्रेष्ठ आरोहण युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the most Glorious Destination.

वर आरोहः अंक अस्य इति वरारोहः अर्थात् भगवान का आरोह अर्थात् गोद श्रेष्ठ है, इसलिए वे वरारोह हैं। परमात्मा में आरूढ़ होना अर्थात् उनकी प्राप्ति ही सबसे महान् उपलब्धि है। अन्य किसी भी लौकिक चीज की उपलब्धि संसार की गति को ही प्राप्त कराती है। परमात्मा को पाने पर आवागनम युक्त संसार से मुक्ति हो जाती है। अतः परमात्मा ही सर्वश्रेष्ठ आरोहण हैं। उन वरारोह स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १२२ -

ॐ महातपसे नमः

महान तपस्या करने वाले प्रभु को नमन।

I salute the one who performs great Tapas.

महत् सृज्यविषयं तपो ज्ञानम् अस्य इति महातपाः अर्थात् भगवान् का सृष्टिविषयक ज्ञान रूपी तप अति महान् हैं अतः वे महातपा हैं। परमात्मा के ज्ञानमय तप से ही यह सुन्दर सृष्टि उत्पन्न होती है। परमात्मा समस्त जगत् के रहस्यों से तथा उसके सत्य के ज्ञान से युक्त रहते हुए सृष्टि के सृजन करते हैं। यह ही उनका ज्ञानमय तप है, जिससे इतनी सुन्दर, सुव्यवस्थित सृष्टि उद्भुत होती है।

उन महातापस् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १२३ -

ॐ सर्वगाय नमः

सर्वत्र व्याप्त को नमस्कार।

I salute the one who pervades everything.

सर्वत्र गच्छति इति सर्वगः अर्थात् सर्वत्र स्थित होने के कारण परमात्मा सर्वग हैं। जिस प्रकार जल समुद्र का मूल उपादान है एवं मूल कारण होने की वजह से समुद्र के प्रत्येक कार्यो में स्थित है, उसी प्रकार परमात्मा भी समस्त ब्रह्माण्ड का मूल उपादान कारण होने की वजह से जगत के प्रत्येक कार्य में विद्यमान अर्थात व्याप्त हैं। अतः वे भगवान विष्णु ही सर्वग कहलाते हैं।

उन सर्वग परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १२४ -

ॐ सर्वविद्भानवे नमः

सबको जाननेवाले स्वप्रकाशरूप परमात्मा को नमन।

I salute the one who is All Knowing & Effulgent.

सर्वं वेत्ति इति सर्ववित् भाति इति भानुः अर्थात् सब कुछ जानते हैं अतः सर्ववित् हैं तथा स्वयं भासित होने की वजह से भानु हैं। परमात्मा समस्त सृष्टि तथा उनके नामरूपों की उत्पत्ति तथा उनकी स्थिति के रहस्यों को जानते हैं, अतः वे सर्ववित् हैं। वे सबको जानते हैं, वे सूर्य की तरह स्वयं प्रकाशस्वरूप हैं। वे भगवान विष्णु ही सर्वविद्भानु हैं।

उन सर्वविद्भानु स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १२५ –

ॐ विष्वक्सेनाय नमः

युद्धक्षेत्र में सब को तितर-बितर करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one before whom all Asura's get scattered.

विष्वक् अंचति पलायते दैत्यसेना यस्य रणोद्योगमात्रेण इति विष्वक्सेनः अर्थात् भगवान् के रण में उपस्थित होने मात्र से दैत्यसेना पलायन कर जाती है, अतः वे विष्वक्सेन कहलाते हैं। भगवान् जब धर्म की रक्षा हेतु दैत्यों का संहार करने के लिए युद्धभूमि में उतरते हैं, तो दैत्यसेना इतने से ही तितर-बितर हो जाती है। आध्यात्मिक धरातल पर भी भगवान् को जीवन में स्थान देने पर मन के अन्तर्गत की आसुरी मूल्य की समाप्ति होकर दैवी मूल्य प्राप्त होते है। उन भगवान को नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १२६ -

ॐ जनार्दनाय नमः

जनार्दन स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who blesses people with joy.

जनैः पुरुषार्थम् अभ्युदय निःश्रेयसलक्षणं याच्यते इति जनार्दनः अर्थात् भक्तजन उनसे अभ्युदय और निःश्रेयस रूप पुरुषार्थ की याचना करते हैं, इसलिए भगवान जनार्दन हैं। जीवन की समस्त सिद्धियां, लौकिक अथवा अध्यात्मिक, ईश्वर की कृपा के बगैर कभी भी सिद्ध नहीं होती हैं। बुद्धिमान व्यक्ति प्रत्येक सिद्धि का श्रेय ईश्वर को ही देता है। ईश्वर का स्मरण बनाए रखते हुए अपने कर्म करने से प्रभु की कृपा से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इस प्रकार परमात्मा जनार्दन हैं, उनको नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १२७ –

ॐ वेदाय नमः

वेद स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who himself is Vedas.

वेदरूपत्वात् वेदः अर्थात् वेदस्वरूप होने से परमात्मा वेद हैं। वेद ज्ञान की निधि है, जिसमें सृष्टि तथा सृष्टि से परे तत्त्व का ज्ञान निहित है। जो भी विषय अपौरुषेय अर्थात् मनुष्य की बुद्धि के द्वारा नहीं जाना जा सकता है, उसके लिए वेद ही प्रमाण होते हैं। परमात्मा उन समस्त ज्ञान से युक्त हैं, क्योंकि वेदों का प्राकट्य सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा के निःश्वास रूप से हुआ है। अतः परमात्मा वेदस्वरूप हैं।

उन वेदस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १२८ –

ॐ वेदविदे नमः

वेदों के अर्थ के ज्ञाता को नमस्कार।

I salute the one who knows the Vedas.

यथावत् वेदं वेदार्थं च वेत्ति इति वेदवित् अर्थात् वेद तथा वेद के अर्थ को जो यथावत् जानते हैं, वे वेदवित् हैं। वेद जिसमें अपौरुषेय विषय तथा सृष्टि और उससे परे तत्त्व का ज्ञान है। यह वेद स्वयं परमात्मा से ही प्रकट हुए है, अतः परमात्मा समस्त वेद, वेदों के अर्थ एवं रहस्यों को जानते हैं।

उन वेदों के अर्थ के ज्ञाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १२९ -

ॐ अव्यङ्गाय नमः

ज्ञान से परिपूर्ण को नमस्कार।

I salute the one who is All-Perfect.

ज्ञानादिभिः परिपूर्णः अविकलः इति उच्यते, न व्यंगः विद्यते इति अव्यंगः अर्थात् ज्ञानादि से परिपूर्ण, अधूरे न होने के कारण वे व्यंग नहीं हैं, अतः अव्यंग कहलाते हैं। परमात्मा समस्त नामरूपात्मक जगत का, जगत की उत्पत्ति आदि के रहस्य का, तथा उनके आधारभूत तत्त्व के ज्ञान से युक्त, परिपूर्ण हैं। अतः उनमें किसी प्रकार की कमी नहीं हैं। जिसमें ज्ञान होता है वह ही उस ज्ञेय का स्वामी एवं नियन्ता होता है, वह अव्यंग कहलाते हैं। उन अव्यंग स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३० -

ॐ वेदाङ्गाय नमः

वेद रूपी अङ्गवाले को नमस्कार।

I salute the one whose very Limbs are Vedas.

वेदाः अङ्गभूता यस्य स वेदाङ्गः अर्थात् वेद जिनके अंगरूप हैं, वे भगवान् वेदाङ्ग हैं। समस्त ब्रह्माण्ड परमात्मा का स्थूल विराट शरीर है, सृष्टि के विविध पदार्थ परमात्मा के इस विराट शरीर के ही विविध अंग है। उसमें वेद को परमात्मा की वाणीरूपा बताया गया है। इस प्रकार वेद परमात्मा के अंगरूप है।

उन वेद रूपी अंगवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १३१ –

ॐ वेदविदे नमः

वेदों पर विचार करवाने वाले को नमस्कार।

I salute the one who reveals the Vedas.

वेदान् विन्ते विचारयति इति वेदवित् अर्थात् वेदों को विचारते हैं, इसलिए वे वेदवित् हैं। वेदों का ज्ञान प्रदान करने के लिए परमात्मा स्वयं गुरुरूप में अवतरित होते हैं। शिष्य के धरातल पर आकर वेदों का ज्ञान देने हेतु उन पर गहराई से विचार करना आवश्यक है। इस प्रकार गुरुरूप में परमात्मा ही वेदों का ज्ञान देने हेतु वेदों पर विचार करते हैं।

उन वेदों पर विचार करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३२ -

ॐ कवये नमः

कान्तदर्शी को नमस्कार।

I salute the one who sees beyond experience.

कान्तदर्शी कविः सर्वदृक् कान्तदर्शी यानी सब को गहराई से देखनेवाले को कवि कहते हैं। कवि वह देख पाता हैं, जो एक साधारण व्यक्ति जिसे देख नहीं पाता तथा उसे भी वह अत्यन्त स्पष्टतापूर्वक देख कर दूसरों को दिखा भी देता हैं। सब के हृदय में विद्यमान सब की आत्मा को एक बहिर्मुखता से युक्त संसारी व्यक्ति नहीं देख पाता है। उसे वे कवि अति स्पष्टता से जानते हैं। अतः वे कान्तदर्शी हैं।

उन कान्तदर्शी कवि रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३३ -

ॐ लोकाध्यक्षाय नमः

लोकों के अध्यक्ष को नमस्कार।

I salute the one who presides over the entire universe.

लोकान् अध्यक्षयति इति लोकाध्यक्षः लोकों का निरीक्षण करते हैं अतः वे लोकाध्यक्ष कहलाते हैं। अध्यक्ष वह होता है, जिनकी प्रेरणा एवं मार्ग-निर्देशन में समस्त कार्य का संचालन होता है। कार्य करना एवं कार्य करवाने में बहुत भेद होता है। अध्यक्ष की विशिष्टता कार्य करवाने में होता है, न कि स्वतः करनेकी। अतः वे लोकाध्यक्ष हैं।

उन लोकाध्यक्ष रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १३४ –

ॐ सुराध्यक्षाय नमः

देवताओं के अध्यक्ष को नमस्कार।

I salute the one who is the master of all Deities.

लोकपालादि सुराणाम् अध्यक्षः सुराध्यक्षः लोकपाल आदि देवताओं के जो अध्यक्ष हैं, वे सुराध्यक्ष हैं। परमात्मा की अध्यक्षता में समस्त देवतागण अपना उत्तरदायित्व सम्हालते हुए समस्त जगत की सेवा में रत रहते हैं। परमात्मा के हस्तक्षेप के बगैर उनकी अध्यक्षता मात्र ही इस कार्यनिर्वाह हेतु पर्याप्त है। इस प्रकार वे देवताओं की भी अध्यक्षता करते हैं। उन सुराध्यक्ष रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३५ -

ॐ धर्माध्यक्षाय नमः

धर्म के अध्यक्ष को नमस्कार।

I salute the one who is presides over the activities of living organisms.

धर्माधर्मौ साक्षाद् ईक्षते अनुरूपं फलं दातुं तस्माद् धर्माध्यक्षः अर्थात् सबके कर्मों के अनुरूप फल देने के लिए धर्म और अधर्म को साक्षात् देखते हैं, इसलिए धर्माध्यक्ष हैं। प्रत्येक जीव अपने अपने धर्म का पालन अपने ही ज्ञान, वासना तथा संस्कार के अनुरूप करता है, जिससे जीव अपने धर्म-अधर्म के अनुरूप फल को प्राप्त करता हैं। उनके धर्म-अधर्म के पालन में परमात्मा हस्तक्षेप नहीं करते हैं। अतः वे धर्माध्यक्ष कहलाते हैं। उन धर्माध्यक्ष रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३६ -

ॐ कृताकृताय नमः

कार्य और कारणस्वरूप प्रभु को नमन।

I salute the one who is the Cause & Effect.

कृतश्च कार्यरूपेण अकृतश्च कारणरूपेण इति कृताकृतः अर्थात् कार्य रूप से कृत और कारण रूप से अकृत होने के कारण कृताकृत हैं। जिस प्रकार मिट्टी के कार्यरूप घड़ा मूलरूप से मिट्टी ही होता है। उसी प्रकार परमात्मा से ही यह सम्पूर्ण कार्यरूप जगत् अभिव्यक्त हुआ है। परमात्मा स्वयं ही कारण भी हैं, तथा कार्य भी हैं।

उन कार्य और कारण स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३७ -

ॐ चतुरात्मने नमः

चार विभूतियों की आत्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Fourfold in His Nature

सर्गादिषु पृथक् विभूतयः चतस्र आत्मानो मूर्तयो यस्य सः चतुरात्मा अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति आदि के लिए जिनकी चार पृथक् विभूतियां अर्थात् मूर्तियां हैं, वे भगवान् चतुरात्मा हैं। चतुरात्मा अर्थात् विष्णुपुराण में कहा है कि 'ब्रह्मा, दक्षादि प्रजापतिगण, काल तथा सम्पूर्ण जीव - ये भगवान् विष्णु की सृष्टि की हेतुभूत चार विभूतियां है। इससे सृष्टि का सृजन, संचालन, व्यवस्था और विनाश होता है। उन चारों विभूतियों की आत्मा स्वयं भगवान् विष्णु हैं। उन चार विभूतियों की आत्मारूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३८ -

ॐ चतुर्व्यूहाय नमः

चार व्यूह वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who manifests with four mighty powers.

व्यूहात्मानं चतुर्धा वै वासुदेवादिमूर्तिभिः। सृष्ट्यादीन प्रकरोत्येष विश्रुतात्मा जनार्दनः।। 'जो प्रभु चार व्यूह बनाकर वासुदेवादि मूर्तियों से सृष्टि एवं पालन आदि करते हैं' वे चतुर्व्यूह कहलाते हैं। यह चार मूर्तियां वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध हैं। जिनके पास यह चार शक्तियां सृष्टि तथा उसके संचालन हेतु है, वे स्वयं भगवान् विष्णु ही हैं। उन चतुर्व्यूह रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १३९ -

ॐ चतुर्दंष्ट्राय नमः

चार दांतवाले नरसिंह रूप को नमस्कार।

I salute the one who is with four teeth as in his Narsimha incarnation.

दंष्ट्राः चतस्रो यस्य इति चतुर्दंष्ट्रः नृसिंह विग्रहः अर्थात् जिनके चार दाढ़ें हैं, वे नरसिंह रूप भगवान् चतुर्दंष्ट्र हैं। भक्तवत्सल भगवान् भक्त के संकट के समय पुकारने पर स्वयं किसी न किसी रूप में प्रकट होते हैं। भक्त प्रहलाद की हिरण्यकश्यप से रक्षा करने हेतु भगवान से चार तीक्ष्ण दाढ़ वाले नरसिंह अवतार को धारण किया था, और भक्त प्रहलाद की रक्षा की थी। उन नरसिंह रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १४० –

ॐ चतुर्भुजाय नमः

चार भुजावाले को नमस्कार।

I salute the one who is with four hands.

चत्वारो भुजाः अस्य इति चतुर्भुजः अर्थात् चार भुजाएं होने के कारण वे चतुर्भुज हैं। पुराणों के अनुसार भगवान् विष्णु का प्रसिद्ध विग्रह चार भुजायुक्त बताया गया है। जिनके प्रत्येक हाथ में शंख, चक्र, गदा और कमल होता है। यह चारों वस्तुएं मानों सृष्टि में धर्म को टिकाए रखने के निमित्त है।

उन शंख आदि युक्त चार भुजाधारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४१ -

ॐ भ्राजिष्णवे नमः

प्रकाश स्वरूप को नमस्कार।

I salute the one who is Self Effulgent.

प्रकाशैकरसत्वात् भ्राजिष्णुः अर्थात् एकरस प्रकाशस्वरूप होने के कारण भ्राजिष्णु हैं। परमात्मा स्वयं प्रकाशस्वरूप है, वे सब को प्रकाशित करते हैं, किन्तु उन्हें प्रकाशित करने हेतु अन्य किसी प्रकाश की अपेक्षा नहीं है। अतः वे भ्राजिष्णु अर्थात् प्रकाशस्वरूप कहे जाते हैं।

उन प्रकाश स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४२ -

ॐ भोजनाय नमः

भोज्य रूप को नमस्कार।

I salute the one who is Food.

भोज्यरूपतया प्रकृतिर्माया भोजनम् इति उच्यते अर्थात् भोज्यरूप होने से प्रकृति यानी माया को भोजन कहते हैं। मायाशक्ति के कार्यरूप समस्त जगत् विविध प्राणियों के द्वारा किसी न किसी रूप में भोजन बनता है। यह भोज्य रूप जगत् परमात्मा की ही अभिव्यक्ति है। इस प्रकार परमात्मा ही भोजन रूप हैं।

उन भोज्य रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४३ -

ॐ भोक्त्रे नमः

भोक्ता स्वरूप को नमस्कार।

I salute the one who is the Experiencer.

पुरुषरूपेण तां भुंक्ते इति भोक्ता अर्थात् वे पुरुष रूप से भोगते हैं, इसलिए भोक्ता हैं। एक ही परमात्मा – जीव, जगत् और ईश्वर रूप से अभिव्यक्त हैं। जगत् रूप से वे ही भोज्य हैं, तथा जीव रूप से वे हि समस्त भोज्य के भोक्ता बनते हैं। इस प्रकार परमात्मा भोक्ता रूप से भी स्थित हैं।

उन भोक्तास्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४४ -

ॐ सहिष्णवे नमः

सहिष्णु स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Forgiver

हिरण्याक्ष आदीन् सहते अभिभवति इति सहिष्ण ु: अर्थात् हिरण्याक्ष आदि को सहन करते हैं अर्थात् उन्हें नीचा दिखाते हैं इसलिए भगवान् सहिष्णु हैं। सहन शक्ति विविध अतियों में अपना संतुलन एवं विचारशीलता बनाए रखने को बोलते हैं। ईश्वर की सृष्टि में सभी रूप होते हैं, एवं इन सबको देखते हुए भी ईश्वर कभी मोहित नहीं होते हैं, अत: वे सहिष्णु दिखते हैं। ऐसे उदार एवं ज्ञान के धाम परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४५ -

ॐ जगदादिजाय नमः

हिरण्यगर्भ को नमस्कार।

I salute the one who is the first born in the Universe.

हिरण्यगर्भरूपेण जगदादौ उत्पद्यते स्वयमिति जगदादिजः अर्थात् जगत के आदि में हिरण्यगर्भ रूप से स्वयं उत्पन्न होते हैं, इसलिए जगदादिज हैं। परमात्मा से जब यह नामरूपात्मक सृष्टि की उत्पत्ति होती हैं, तो सब से पूर्व परमात्मा की अभिव्यक्ति बीजात्मक रूप में होती है। इस संकल्प रूपी बीज की अवस्था को ही हिरण्यगर्भ कहा जाता है। एवं परमात्मा ही हिरण्यगर्भ अर्थात् जगत के आदि में अभिव्यक्त हैं। उन हिरण्यगर्भ स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४६ -

ॐ अनघाय नमः

निष्पाप स्वरूप को नमस्कार।

I salute the one who is the Sinless.

अघं न विद्यते अस्य इति अनघः अर्थात् भगवान् में पाप नहीं है, इसलिए वे अनघ हैं। परमात्मा किसी भी प्रकार के पाप व पुण्य से अप्रभावित, शुद्ध स्वरूप हैं। वे सृष्टि, स्थिति और संहार करते हैं, किन्तु ये कर्म उन्हें लेश मात्र भी स्पर्श नहीं करते हैं। अतः वे निष्पाप हैं।

उन निष्पाप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४७ -

ॐ विजयाय नमः

विजय स्वरूप को नमस्कार।

I salute the one who is the Victorious.

विजयते ज्ञानवैराग्य-ऐश्वर्यादिभिः गुणैः विश्वमिति विजयः अर्थात् ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य आदि गुणों से विश्व को जीतते हैं इसलिए वे विजय हैं। परमात्मा में समस्त ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य आदि निहित हैं। समस्त जीव इसीसे वशीभूत होकर उनके प्रति आकर्षित होते हैं। इस प्रकार परमात्मा ने समस्त विश्व को इन गुणों के माध्यम से जीता हुआ हैं, इसलिए वे विजय कहलाते हैं।

उन विजय स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १४८ -

ॐ जेत्रे नमः

सब को जीतनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who is Ever Successful.

यतो जयति अतिशेते सर्वभूतानि स्वभावतो अतो जेता अर्थात् स्वभाव से ही समस्त भूतों को जीतते हैं, इसलिए जेता हैं। परमात्मा स्वरूपतः आनन्द स्वरूप हैं। प्रत्येक प्राणी आनन्द की ही प्राप्ति के लिए प्रयत्नरत रहता है। तथा आनन्द के ही वशीभूत रहता है। इस प्रकार से परमात्मा ने अपनी आनन्दस्वरूपता से सब को जीता हुआ है।

उन सर्वविजयी एवं सबके स्वामी, आनन्दस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १४९ –

ॐ विश्वयोनये नमः

विश्व की योनि को नमस्कार।

I salute the one who is the cause of Universe.

विश्वः च असौ योनिः च इति विश्वयोनिः अर्थात् विश्व और योनि दोनों वही हैं, इसलिए वे विश्वयोनि हैं। परमात्मा विश्व के सृष्टा हैं अर्थात निमित्त कारण हैं, और साथ-साथ वे ही इसके उपादान कारण भी होने से वे ही विश्व की तरह से प्रकट हैं। ऐसे अभिन्न उपादान एवं निमित्त कारण परमात्मा को विश्वयोनि कहा जाता है।

उन विश्वयोनि रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १५० –

ॐ पुनर्वसवे नमः

पुनः पुनः शरीर में वास करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who repeatedly comes & resides in the body

पुनः पुनः शरीरेषु वसति क्षेत्रज्ञरूपेण इति पुनर्वसुः अर्थात् क्षेत्रज्ञ रूप से पुनः पुनः शरीरों में बसते हैं, इसलिए पुनर्वसु हैं। परमात्मा ही समस्त शरीर रूपी क्षेत्र में क्षेत्रज्ञ अर्थात् जीव की तरह वास करते हैं। जीव अपने अपने पाप–पुण्य आदि कर्म के अनुसार एक शरीर को त्यागकर दूसरे शरीर को इस प्रकार सतत कर्मवशात् शरीर धारण करके उसमें बसते हैं। शरीरों में बार–बार मुक्तिपर्यन्त वास करनेवाले प्रभु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १५१ –

ॐ उपेन्द्राय नमः

इन्द्र से श्रेष्ठ को नमस्कार।

I salute the one who is above Indra.

उपरि इन्द्रः उपेन्द्रः अर्थात् इन्द्र से श्रेष्ठ हैं, इसलिए वे उपेन्द्र हैं। समस्त देवताओं के राजा इन्द्र देवता हैं। वे ही समस्त देवताओं को तथा हमारी इन्द्रियां और मन को भी संचालित व नियन्त्रित भी करते हैं। किन्तु सब देवताओं के स्वामी इन्द्र को नियन्त्रित करने वाले स्वयं परमात्मा हैं। उन्हीं के अधीन रहकर इन्द्र देवता शक्तिशाली बनते हैं तथा अपने दायित्व का निर्वाह कर पाते हैं। उन इन्द्र देवता से भी श्रेष्ठ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १५२ –

ॐ वामनाय नमः

वामन रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who incarnated as Vaman.

बलिं वामनरूपेण याचितवान् इति वामनः अर्थात् वामन रूप से बलि से याचना की थी इसलिए वामन हैं। भगवान् का अवतार धर्म संस्थापना तथा अपने भक्तों के कल्याण हेतु होता है। महादानवीर बलि, भगवान् का महान् भक्त था, किन्तु दानी होने का अभिमान उनके लिए अभिशाप रूप था। उनके अभिमान को खण्डित करने हेतु भगवान् विष्णु ने प्रसिद्ध वामन अवतार लिया था।

उन वामन स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १५३ -

ॐ प्रांशवे नमः

उंचाई को प्राप्त को नमस्कार।

I salute the one who is Lofty.

स एव जगत् त्रयं क्रममाणः प्रांशुः अभूत् इति प्रांशुः अर्थात् वे तीनों लोकों को लांघने के समय उंचे हो गए थे, इसलिए प्रांशु कहलाते हैं। वामन अवतार के समय दानवीर महाराज बलि से साढ़े तीन कदम भूमि मांगी थी। तब राजा बलि ने दातापन के अभिमान से युक्त होकर वामनस्वरूप प्रभु को दान में दे दी। वामन स्वरूप प्रभु ने उनके अभिमान को खण्डित करने हेतु विराट् रूप धारण करके तीन कदम में तीनों लोक नाप लिए और शेष कदम महाराज बलि के सिर पर रखकर उनके अभिमान को ध्वस्त किया था। एवं भक्त एवं दानवीर बलि का उद्धार किया था। उन भक्त उद्धारक प्रांशु रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १५४ -

ॐ अमोघाय नमः

निरर्थक चेष्टा से रहित को नमस्कार।

I salute the one Whose Acts are for a Great Purpose.

न मोघं चेष्टितं यस्य सः अमोघः अर्थात् जिनकी चेष्टा व्यर्थ नहीं होती, वे भगवान् अमोघ हैं। परमात्मा का प्रत्येक उत्पत्ति आदि कार्य तथा अवतार लेने के उपरान्त भी किये जा रहे प्रत्येक कर्म के पीछे कोई न कोई महान प्रयोजन होता है। उनकी कोई भी चेष्टा कभी भी व्यर्थ नहीं होती।

उन अमोघ स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १५५ –

ॐ शुचये नमः

पवित्र करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who gives purity to devotees..

स्मरतां स्तुवतां अर्चयतां च पावनत्वात् शुचिः अर्थात् स्मरण, स्तुति और पूजन करनेवालों को पवित्र करने वाले होने से भगवान् शुचि हैं। मनुष्य जिसका संग करता है, वैसा उसका मन बनता है। परमात्मा पवित्र, शुद्ध स्वरूप हैं, इसलिए उनका स्मरण, उनका भजन, उनकी सेवा आदि से मनुष्य का मन को शुद्ध व पवित्र होने लगता हैं।

उन शुद्ध और पवित्र करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १५६ -

ॐ ऊर्जिताय नमः

अत्यन्त बलशाली परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has infinte strength & vitality.

बलप्रकर्षशालित्वात् ऊर्जितः अर्थात् अत्यन्त बलशाली होने के कारण ऊर्जित हैं। परमात्मा अत्यन्त बलशाली हैं। जगत् में कई पदार्थ अत्यन्त ऊर्जावान् दिखते है। एक छोटा सा परमाणु भी पूरी सृष्टि का विनाश करने में सक्षम हो सकता है। इसके अलावा अनेकों जीव भी बलशाली देखे जाते हैं। उन सब का बल परमात्मा के बल के सामने तिनके के बराबर है, क्योंकि सब की उर्जा का मूल स्रोत परमात्मा ही हैं।

उन बलशाली परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १५७ –

ॐ अतीन्द्राय नमः

इन्द्र से परे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is beyond Indra.

अतीत्य इन्द्रं स्थितो ज्ञान–ऐश्वर्यादिभिः स्वभावद्धैः इति अतीन्द्रः अर्थात् अपने स्वभावसिद्ध ज्ञान–ऐश्वर्य आदि के कारण इन्द्र से भी बढ़कर हैं इसलिए अतीन्द्र हैं। इन्द्र स्वर्ग के राजा ज्ञान, ऐश्वर्य और बल के धनी माने जाते हैं, किन्तु उनका ऐश्वर्य आदि परमात्मा के बल का लवलेश भी नहीं है। इन्द्र आदि के ज्ञान, ऐश्वर्य आदि का मूल स्रोत भी परमात्मा ही हैं।

उन इन्द्र से पर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १५८ –

ॐ संग्रहाय नमः

प्रलय के समय सब के संग्रहकर्ता को नमस्कार।

I salute the one who is holder unto Himself.

सर्वेषां प्रतिसंहारात् संग्रहः अर्थात् प्रलय के समय सब का संग्रह करने के कारण संग्रह हैं। जब सृष्टि का प्रलय होता है, तब समस्त चर–अचर, स्थूल–सूक्ष्म, कार्य–कारण आदि अव्यक्त की अवस्था में लीन हो जाते हैं। उन अव्यक्त बीज को परमात्मा ही धारण किये रहते हैं। इस प्रकार वे प्रलय के समय समस्त को अपने अन्दर संगृहीत कर लेते हैं।

उन संग्रह रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १५९ –

ॐ सर्गाय नमः

जगत् रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Creation.

सृज्यरूपतया, सर्गहेतुत्वाद् वा सर्गः अर्थात् जगत् रूप होने से अथवा सृष्टि का कारण होने से सर्ग हैं। प्रलय के समय जो सृष्टि परमात्मा में बीज रूप से निहित थी, वह ही पुनः व्यक्त होती है। यह अव्यक्त रूप बीज का अपना परमात्मा से पृथक् अस्तित्व नहीं है। परमात्मा ही अपने अव्यक्त बीज रूप से व्यक्त सृष्टि की तरह अभिव्यक्त होते हैं।

उन सृष्टि स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १६० –

ॐ धृतात्मने नमः

एकरूप धारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Self-supporter.

एकरूपेण जन्मादिरहिततया धृत आत्मा येन स धृतात्मा। अर्थात् जो जन्मादि से रहित रहकर अपने स्वरूप को एकरूप से धारण किये हुए हैं, वे भगवान् धृतात्मा हैं। परमात्मा स्वयं सृष्टि रूप से, अनेक रूपों में अभिव्यक्त हैं। तथापि वे स्वयं एक हैं तथा जन्म–मृत्यु आदि समस्त विकारों से रहित, स्वरूप से कभी भी च्युत नहीं होते हैं। उन धृतात्मस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १६१ –

ॐ नियमाय नमः

नियमस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is appointing authority.

स्वेषु स्वेषु अधिकारेषु प्रजा नियमयति इति नियमः अर्थात् अपने अपने अधिकारों में प्रजा को नियमित करते हैं, इसलिए नियम हैं। सूर्य, चन्द्र आदि समस्त प्रकृति के तत्त्वों अपने अपने धर्म में निष्ठ रहते हैं, अतः सृष्टि की सुन्दर व्यवस्था चल रही है। उन समस्त प्रकृति के तत्त्वों में जिन्होंने नियम स्थापित करके सृष्टि की सुन्दर व्यवस्था बनाई है, वे परमात्मा हैं। उन नियम के स्थापयिता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १६२ -

ॐ यमाय नमः

नियमन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is an administrator.

अन्तर्यच्छति इति यमः अर्थात् अन्तःकरण में स्थित होकर नियमन करते हैं, इसलिए यम हैं। जगत के सभी तत्त्व निश्चित नियमों के अधीन होकर सृष्टि की स्थिति बनाए रखने हेतु अपना योगदान दे रहे हैं। इसी कारण सृष्टि में एक सुन्दर व्यवस्था दीख रही है। ब्रह्माण्ड के सभी तत्त्वों की अन्तरात्मा की तरह से स्थित रहकर वे ही सब का नियमन कर रहे हैं।

उन यम स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १६३ –

ॐ वेद्याय नमः

जानने योग्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Knowable.

निःश्रेयस अर्थिभिः वेदनार्हत्वाद् वेद्यः अर्थात् कल्याण की इच्छावालों द्वारा जानने योग्य हैं, इसलिए वेद्य हैं। जीव का वास्तविक कल्याण, जीवन के सत्य रूपी परमात्मा को जानने से ही होता हैं। वे ही मोक्षदायी पर–विद्या के विषय हैं। श्रुति अपरा विद्या के विषय ईश्वर की मायामय सृष्टि को भी वेदितव्य कहते है। इसलिए वे ही वेद्य अर्थात् जानने योग्य हैं।

उन वेद्य स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १६४ -

ॐ वैद्याय नमः

समस्त विद्याओं के ज्ञाता को नमस्कार।

I salute the one who is Supreme Knower.

सर्वविद्यानां वेदितृत्वाद् वैद्यः अर्थात् सब विद्याओं के जाननेवाले होने से वैद्य हैं। जिस प्रकार घड़े को बनाने वाले कुम्हार को घड़ा बनाने की विद्या का ज्ञान होता है, इसलिए घटकर्ता घटज्ञः कहा जाता है। वैसे ही समस्त जगत को बनाने वाले परमात्मा को समस्त जगत के बारे में ज्ञान होता है। उसमें निहित समस्त विद्याओं का तथा सृष्टि के उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के रहस्य का भी ज्ञान होना चाहिए। परमात्मा सब कुछ जानते हैं, अतः उन्हें वैद्य कहा। उन वैद्य रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १६५ -

ॐ सदायोगिने नमः

सदैव प्राप्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is eternal yogi.

सदा आविर्भूतस्वरूपत्वात् सदायोगी अर्थात् सदा प्रत्यक्षस्वरूप होने के कारण सदायोगी हैं। योग का अर्थ जुड़ना होता है। जो जुड़ा हुआ है, उसे योगी कहा जाता है। परमात्मा सब की आत्मा की तरह से विराजमान होने के कारण सब के लिए प्रत्यक्ष ही हैं। यदि आज उनके होने का भान नहीं हो रहा है, तो उसके पीछे अज्ञान ही कारण है।

उन सदैव आत्मा की तरह से प्राप्त सदायोगी रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १६६ -

ॐ वीरघ्ने नमः

वीर असुर योद्धाओं के हन्ता को नमस्कार।

I salute the one who is th destroyer of mighty tyrants.

धर्मत्राणाय वीरान् असुरान् हन्ति इति वीरहा अर्थात् धर्म की रक्षा के लिए वीरों को यानी असुर योद्धाओं को मारते हैं, इसलिए वीरहा कहलाते हैं। धर्म की रक्षा हेतु परमात्मा स्वयं अवतरित होते हैं, और महाबलशाली असुर, जिसे देवता लोग भी परास्त नहीं कर पाते हैं, उन वीर योद्धाओं को मारते हैं। अतः वे वीरहा हैं।

उन वीरहा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १६७ -

ॐ माधवाय नमः

विद्या के स्वामी रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of knowledge.

माया विद्याया: पति: माधव: अर्थात् विद्या के पति होने से माधव हैं। माया का अर्थ ईश्वर की शक्ति है, जगत-जननी बताया गया था। सात्विक माया विद्यारूपा है। परमात्मा समस्त विद्याओं के स्वामी हैं। समस्त विद्याएं उन्हीं से उद्भूत हुई है, तथा उन्हीं से समस्त विद्या का अस्तित्व हैं।

उन विद्यापति परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १६८ -

ॐ मधवे नमः

मधु स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the nectarine bliss.

यथा मधु परां प्रीतिं उत्पादयति अयमपि तथा इति मधुः अर्थात् जिस प्रकार शहद अत्यन्त प्रसन्नता उत्पन्न करता है, उसी प्रकार भगवान् भी करते हैं, इसलिए वे मधु हैं। किसी भी वस्तु, व्यक्ति वा परिस्थिति से आनन्द की अनुभूति का कारण परमात्मा ही हैं। परमात्मा ही समस्त जगत की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप होने की वजह से विषयों में भी आनन्द की तरह से प्रतीत होते हैं। उन आनन्द स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १६९ -

ॐ अतीन्द्रियाय नमः

इन्द्रियों से परे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is beyond the senses.

शब्दादिरहितत्वाद् इन्द्रियाणां अविषयः इति अतीन्द्रियः अर्थात् शब्दादि विषयों से रहित होनेके कारण भगवान् इन्द्रियों के विषय नहीं है, अतः अतीन्द्रिय हैं। कर्ण आदि इन्द्रियों का कार्य शब्द आदि विषयों को ग्रहण करना है। परमात्मा शब्दादि समस्त विषयों से रहित हैं तथा कर्णादि इन्द्रियां उन्हींसे सत्ता-स्फूर्ति से युक्त होकर विषयों को ग्रहण करने में समर्थ होती है। अतः वे इन्द्रियों के द्वारा ग्राह्य नहीं होते हैं। अतः वे अतीन्द्रिय कहलाते हैं। उन अतीन्द्रिय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १७० -

ॐ महामायाय नमः

महामायावि परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the supreme master of Maya.

मायाविनाम् अपि मायाकारित्वात् महामायः अर्थात् मायावियों पर भी माया फैलाने में सक्षम हैं, इसलिए वे महामाया हैं। ईश्वर मायापति हैं, माया उनके अधीन रहकर इन विविधतापूर्ण जगत की प्रस्तुति करती हैं। वे स्वयं माया से अस्पृष्ट रहते हैं। लौकिक मायावी जो अपनी माया से विविध रचना प्रस्तुत करता है, वह मायावी स्वयं मायापति परमात्मा की मायाशक्ति के ही वशीभूत रहता है।

उन महामायावी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १७१ –

ॐ महोत्साहाय नमः

उत्पत्ति आदि हेतु तत्पर परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the enthusiastic accomplisher.

जगतः उत्पत्तिस्थितिलयार्थम् उद्युक्तत्वात् महोत्साहः अर्थात् जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के लिए तत्पर रहने के कारण महोत्साह हैं। सृजनादि की प्रक्रिया किसी उत्साही के बगैर सम्भव नहीं होती है। इस अद्‌भुत सृष्टि की सतत उत्पत्ति, स्थिति और लय की प्रक्रिया होती रहती है, निश्चित रूप से उसके पीछे कोई अति उत्साही का अस्तित्व है, वह ही परमात्मा हैं।

उन महा उत्साही परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १७२ –

ॐ महाबलाय नमः

महाबलशाली परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Omnipotent.

बलिनामपि बलवत्त्वात् महाबलः अर्थात् बलवानों में भी अधिक बलवान् होने के कारण महाबल हैं। परमात्मा षड् ऐश्वर्य से युक्त होने के कारण भगवान कहलाते हैं। ज्ञान, ऐश्वर्य, शक्ति, बल, वीर्य और तेज इन छह भग के वे धाम अर्थात् मूल स्रोत हैं। सृष्टि में कहीं पर भी कोई बलशाली दिखता है, तो वह उन्हीं भगवान के बल के लवलेश से बलान्वित हो रहा है। एवं भगवान विष्णु ही महाबलशाली हैं।

उन महाबलशाली परमात्मा को हमारा सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १७३ –

ॐ महाबुद्धये नमः

महा बुद्धिमान परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Omniscient.

बुद्धिमताम् अपि बुद्धिमत्त्वात् महाबुद्धिः अर्थात् प्रभु बुद्धिमानों में भी महान् बुद्धिमान् होने के कारण महाबुद्धि हैं। ज्ञान, ऐश्वर्य आदि छह भग से युक्त भगवान ही वास्तविक बुद्धि के धाम और स्रोत हैं। भगवान स्वयं गीता में बताते हैं कि बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि, अर्थात् बुद्धिमानों की बुद्धि हम हैं, क्योंकि समस्त बुद्धिमानों की बुद्धि का वास्तविक स्रोत स्वयं भगवान हैं।

उन महाबुद्धिमान परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १७४ -

ॐ महावीर्याय नमः

महान वीर्य को नमस्कार।

I salute the one who is Supreme Quintessence.

महद् उत्पत्तिकारणम् अविद्यालक्षणं वीर्यम् अस्य इति महावीर्यः अर्थात् संसार की उत्पत्ति की कारणरूपा अविद्या भगवान् का महान् वीर्य होने से वे महावीर्य कहलाते हैं। परमात्मा की मायाशक्ति योनिरूपा हैं। परमात्मा मानो इन माया अर्थात् जड़ प्रकृति की योनि में चेतना प्रदान करने रूप गर्भाधान करते हैं, इसी से माया विविधतापूर्ण जगत प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार परमात्मा ही जगत के पिता बनते हैं, अतः सृष्टि के कारणरूप महान् वीर्य हैं।

उन महान् वीर्यरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १७५ –

ॐ महाशक्तये नमः

महान् शक्तिशाली परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All Powerful.

महती शक्तिः सामर्थ्यम् अस्य इति महाशक्तिः अर्थात् उनकी शक्ति अर्थात् सामर्थ्य अति महान् है, इसलिए वे महाशक्ति कहलाते हैं। जिन मायारूपा योनि में परमात्मा गर्भाधान करते हैं, वह माया स्वयं जड़ है, उसकी स्वतंत्र कोई सत्ता नहीं है। परमात्मा के अधीन रहकर जीवन्त होकर सुन्दर, अद्भुत, विविधतापूर्ण सृष्टि को प्रस्तुत करने में समर्थ होती है। इस प्रकार परमात्मा ही इस महान शक्ति से युक्त हैं।

उन महान् शक्तिशाली परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १७६ -

ॐ महाद्युतये नमः

महान् ज्योतिस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Effulgence.

महती द्युतिः बाह्य-अभ्यन्तरा च अस्य इति महाद्युतिः अर्थात् उनकी बाह्य और अन्तर ज्योति महान् है, इसलिए वे महाद्युति हैं। परमात्मा सब के हृदय में स्थित चेतना हैं। वे सब के हृदय में स्थित रहकर इन्द्रियां और मन के द्वारा बाह्य पंचमहाभूत को प्रकाशित करते हैं। जिन सूर्य, चन्द्र और अग्नि की ज्योति से सब प्रकाशित होता है, वह सब परमात्मा के प्रकाश में ही जाना जाता है। इसके अलावा मन के संकल्प, भावना आदि सूक्ष्म आन्तर वृत्तियां भी उन्हींके प्रकाश में प्रकाशित होती है। इस प्रकार वे महान् ज्योतिस्वरूप है। उन महान् ज्योतिस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १७७ -

ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः

अनिर्देश्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is ungraspable.

इदं तदिति निर्देष्टुं यन्न शक्यते परस्मै स्वसंवेद्यत्वात् तद् अनिर्देश्यं वपुः अस्य इति अनिर्देश्यवपुः अर्थात् 'वह यह है' इस प्रकार दूसरों के लिए निर्दिष्ट न किया जा सकता है, उसे अनिर्देश्य कहते हैं; भगवान् अनिर्देश्य है, इसलिए वे अनिर्देश्यवपु हैं। किसी भी विषय को शब्द के द्वारा परिभाषित करने के द्वारा उसका ज्ञान दिया जा सकता है और इस प्रकार से उसका निर्देश होता है। परमात्मा शब्द के द्वारा परिभाषित नहीं हो सकते हैं, अतः उन्हें अनिर्देश्यवपु कहा जाता है।

उन अनिर्देश्य स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १७८ –

ॐ श्रीमते नमः

समग्र ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Glorious one.

ऐश्वर्यलक्षणा समग्रा श्रीः यस्य सः श्रीमान् अर्थात् जिनमें ऐश्वर्यरूप समग्र श्री है, वे भगवान् श्रीमान् हैं। समस्त ज्ञान, वैभव, शक्ति, बल, वीर्य और तेज रूप छह ऐश्वर्य सम्पूर्ण मात्रा में परमात्मा में है। जगत में जो कुछ भी ऐश्वर्य दिखता है, वह परमात्मा के ऐश्वर्य का लेश मात्र ही है। अतः वे श्रीमान् कहलाते हैं।

उन समग्र ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १७९ -

ॐ अमेयात्मने नमः

बुद्धि की सीमा से परे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is inestimable.

सर्वैः प्राणिभिः अमेया बुद्धिः आत्मा यस्य स अमेयात्मा अर्थात् जिनकी बुद्धि समस्त प्राणियों से अमेय है, वे भगवान् अमेयात्मा हैं। परमात्मा स्वयं ज्ञानस्वरूप हैं, तथा सब के सृष्टा होने की वजह से सर्वज्ञ हैं। उनका ज्ञान असीम है, जिसे मनुष्य की क्षुद्र बुद्धि के द्वारा जान पाना असम्भव है। अतः वे अमेयात्मा कहलाते हैं।

उन असीम ज्ञान से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १८० -

ॐ महाद्रिधृते नमः

महान् पर्वतधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is supporter of the Mountain.

महान्तं अद्रिं गिरिं मन्दरं गोवर्धनं च अमृतमन्थने गोरक्षणे च धृतवान् इति महाद्रिधृक् अर्थात् अमृतमन्थन और गोरक्षण के समय मन्दराचल और गोवर्धन नामक महान् पर्वतों को धारण किया था, इसलिए भगवान् महाद्रिधृक् हैं। समुद्रमंथन के समय जब मन्दराचल समुद्र में धसने लगा तब कछुए का रूप धारण करके भगवान विष्णु ने उन्हें अपनी पीठ पर धारण किया था। तथा श्रीकृष्ण के अवतार में इन्द्र के प्रकोप से गोकुल की रक्षा करने हेतु गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा अंगुलि पर धारण किया था।

उन महान् पर्वतधारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १८१ -

ॐ महेष्वासाय नमः

महान् धनुर्धर को नमस्कार।

I salute the one who is the Wielder of the Great Bow.

महान् इष्वास इषुक्षेपो यस्य स महेष्वासः अर्थात् जिनका धनुष महान् है, वे भगवान् महेष्वास हैं। उनका प्रसिद्ध धनुष सारंग नाम से जाना जाता है। भगवान समय समय पर अवतार लेकर इस धनुष को धारण करके असुरों तथा दुष्टों का संहार करते हैं। ऐसे दुष्टों और असुरों के विनाशक महान् धनुर्धर भगवान् विष्णु हैं।

उन महान् धनुर्धर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १८२ -

ॐ महीभर्त्रे नमः

पृथ्वी को धारण करनेवाले को नमस्कार।

I salute the one who is the Supporter of the Earth.

एकार्णवाप्लुतां देवीं महीं च बभोरेति महीभर्ता अर्थात् प्रलयकालीन जल में डूबी हुई पृथ्वी को धारण किया था, इसलिए महीभर्ता हैं। पुराण के अनुसार जब पृथ्वी पाताल में धसने लगी तब भगवान् विष्णु ने स्वयं वराह का रूप धारण करके पृथ्वी का उद्धार किया था। इसके अलावा वे ही पृथ्वी को धारण किए हुए हैं, इसीलिए पृथ्वी तथा उन पर स्थित समस्त पंचमहाभूतात्मक सृष्टि और विविध प्राणी जगत का अस्तित्व टिका हुआ है।

उन पृथ्वी के धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १८३ -

ॐ श्रीनिवासाय नमः

श्री के निवासरूप को नमस्कार।

I salute the one in whom Devi Lakshmi permenantly abides.

यस्य वक्ष्यसि अपनायिनी श्रीः वसति सः श्रीनिवासः अर्थात् जिनके वक्षःस्थल में कभी न नष्ट होनेवाली श्री निवास करती है, वे भगवान् श्रीनिवास हैं। पुराण अनुसार श्री अर्थात् लक्ष्मीजी भगवान विष्णु की पत्नी हैं। भगवान विष्णु के प्रति समर्पित, सदैव उनके चरणों की अनुरागी रहती हैं। ऐसे भक्तों को भगवान् अपने हृदय में स्थान देते हैं। अतः लक्ष्मीजी भी सदैव भगवान के वक्षःस्थल में अर्थात् भगवान के हृदय में वास करती हैं।

उन लक्ष्मीजी को सदैव हृदय में धारण करने वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १८४ -

ॐ सतां गतये नमः

सत्पुरुषों की गतिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is goal of the Virtuous.

सतां वैदिकानां साधूनां पुरुषार्थ साधन हेतुः सतां गतिः अर्थात् सत्पुरुषों के पुरुषार्थ साधन के हेतु होने से भगवान् सतां गति हैं। मनुष्य परं सुख की प्राप्ति की इच्छा से प्रेरित होकर जगत के किसी न किसी विषय में इसकी कल्पना करके प्रवृत्त होता है। जो वैदिक दृष्टि से युक्त हैं, ऐसा सत्पुरुष दुन्यवी विषयों पर आश्रित होकर उससे सुख की कामना नहीं करते हैं, किन्तु परमात्मा को ही अपने जीवन का लक्ष्य जानते हैं, तथा इस लक्ष्य की सिद्धि हेतु भी परमात्मा के प्रति ही आश्रित होते हैं। परमात्मा ही सत्पुरुषों का गन्तव्य तथा मार्ग भी हैं। उन सत्पुरुषों की गतिरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १८५ –

ॐ अनिरुद्धाय नमः

अनिरूद्ध रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Irresistible.

न केनापि प्रादुर्भाविषु निरुद्ध इति अनिरुद्धः अर्थात् प्रादुर्भाव के समय किसीसे निरुद्ध नहीं हुए इसलिए अनिरुद्ध हैं। जगत की प्रत्येक वस्तु परमात्मा सक ही उत्पन्न होती है, वे ही सबके आदि कारण हैं। अन्य सभी महान और श्रेष्ठ अभिव्यक्तियां कार्य रूपा हैं। कोई भी कार्य अपने कारण को निरुद्ध नहीं कर सकता है, अतः भगवान अनिरुद्ध कहलाते हैं।

उन अनिरुद्ध और सभी से अप्रभावित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १८६ -

ॐ सुरानन्दाय नमः

देवताओं को आनन्द देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Enchanter of Deities.

सुरान् आनन्दयति इति सुरानन्दः अर्थात् देवताओं को आनन्दित करते हैं, इसलिए सुरानन्द हैं। देवतागण अपने अपने धर्म का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं। इस प्रकार जगत की व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। धर्ममार्ग का अनुसरण करनेवालों के लिए परमात्मा आनन्ददायी होते हैं। अतः धर्म का निष्ठापूर्वक पालन करनेवाले देवताओं के लिए आनन्द देनेवाले हैं।

उन सुरानन्द रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १८७ -

ॐ गोविन्दाय नमः

गोविन्द रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the protector of Cows.

'नष्टां वै धरणीं पूर्व अविन्दत् यद्गुहागताम्। गोविन्द इति तेनाहं देवैर्वाग्भिरभिष्टुतः।।' अर्थात् 'मैंने पूर्वकाल में नष्ट हुई पातालगत पृथ्वी को पाया था, इसलिए देवताओंने अपनी वाणी से 'गोविन्द' कहकर स्तुति की।' पृथ्वी जब पाताल में धसने लगी तब भगवान् विष्णु ने वराह का अवतार लेकर पृथ्वी को धारण किया और रक्षा की, अतः भगवान् विष्णु गोविन्द कहलाते हैं।

उन गोविन्द रूप में परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १८८ -

ॐ गोविदां पतये नमः

गोविद के स्वामी को नमस्कार।

I salute the one who the lord of Seers.

गौः वाणी तां विन्दति इति गोविदः तेषां पतिः विशेषेण इति गोविदां पतिः अर्थात् गो वाणी को कहते हैं, जो उसे जानते हैं, वे गोविद कहलाते हैं। उनके विशेषतः पति होने के कारण भगवान् गोविदां पति हैं। जो वेदों के अर्थ को जानते हैं, वे ऋषिगण तथा ज्ञानवान् हैं। उनके स्वामी परमात्मा हैं।

उन वेदवाणी के ज्ञाता के स्वामी रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १८९ –

ॐ मरीचये नमः

मरीचि रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Effulgent.

तेजस्विनामपि तेजस्त्वात् मरीचिः अर्थात् तेजस्वियों का परं तेज होने के कारण मरीचि हैं। जगत में जो भी महान् ज्ञान तथा तपस् के तेज से युक्त हैं, उनसे उन महान् ज्ञानवान् और तपस्वियों का तेज परमात्मा से ही तेजस्वी होता हैं। अतः समस्त तेजस्वियों के तेज स्वरूप परमात्मा ही हैं।

उन तेजस्वियों के तेज स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १९० –

ॐ दमनाय नमः

यमरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the controller.

स्वाधिकारात् प्रमाद्यती: प्रता दमयितुं शीलम् अस्य वैवस्वतादिरूपेण इति दमनः अर्थात् अपने अधिकार में प्रमाद करनेवाली प्रजाको सूर्य के पुत्र यम आदि रूप से दमन करनेका भगवान् का स्वभाव है, इसलिए वे दमन हैं। यम अर्थात् मृत्यु के देवता के भय से समस्त प्रजा धर्ममार्ग का अनुसरण करती हैं। इस प्रकार यमराज के रूप में अधर्म के मार्ग पर चलने से रोकते हैं।

उन सब का दमन करनेवाले यम रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १९१ -

ॐ हंसाय नमः

विवेकरूपा प्रभु को नमस्कार।

I salute the one who liberates the wise ones

अहं सः इति तादात्म्यभाविनः संसारभयं हन्ति इति हंसः अर्थात् 'मैं वह हूं' इस प्रकार तादात्म्यभाव से भावना करनेवाले का संसार भय नष्ट कर देते हैं, इसलिए भगवान् हंस हैं। जीव स्वयं को परमात्मा से पृथक् मानकर क्षुद्रता से युक्त होता है, और संसार की गति को प्राप्त करता है। जो वेद प्रमाण से तत्त्वज्ञान प्राप्त करके जान जाता है कि अहं सः अर्थात् हम परमात्म स्वरूप ही है, वह संसारभय से मुक्त हो जाता है।

उन संसारभय से मुक्ति के हेतु रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १९२ -

ॐ सुपर्णाय नमः

सुन्दर पंख से युक्त को नमस्कार।

I salute the one who is ther winged one

शोभनं पर्णं यस्य इति सुपर्णः अर्थात् सुन्दर पंखों के कारण सुपर्ण हैं। मुण्डक उपनिषद् बताता हैं कि दो पक्षी का जोड़ा जीव और ईश्वर रूप से इस शरीर रूपी वृक्ष पर रहता हैं। जिसमें जीव भोक्ता बनकर सतत भोग कर रहा है तथा ईश्वर साक्षी रूप से उनको देखता है। जो शरीर रूपी वृक्ष की हृदय रूपी कोटर में साक्षी रूप पक्षी तरह स्थित है, वह ईश्वर ही सुपर्ण हैं।

उन सुन्दर पंख से युक्त ईश्वर को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १९३ -

ॐ भुजगोत्तमाय नमः

भुजाओं से चलनेवालें में श्रेष्ठ को नमस्कार।

I salute the one who is the Divine Snake

भुजेन गच्छताम् उत्तमो भुजगोत्तमः अर्थात् भुजाओं से चलनेवालों में उत्तम होने से भुजगोत्तम हैं। पुराण के अनुसार भगवान् विष्णु क्षीरसागर में अनन्त अर्थात् शेषनाग की शय्या पर विराजमान हैं। गीता में भगवान ने बताया कि अनन्तश्चास्मि नागानाम्। समस्त नाग में अनन्त नाम हम हैं। अनन्तनाग परमात्मा की विभूति है।

उन भुजाओं से चलनेवाले सर्पो में श्रेष्ठ अनन्तनाग रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- १९४ -

ॐ हिरण्यनाभाय नमः

हिरण्यनाभ स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who manifests as the Creator.

हिदण्यमिव कल्याणी नाभिः अस्य इति हिरण्यनाभः अर्थात् भगवान् की नाभि स्वर्ण के समान कल्याणमयी है, इसलिए वे हिरण्यनाभ हैं। पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु की नाभि कमल से जगत के सृष्टा ब्रह्माजी की उत्पत्ति हुई हैं। ब्रह्माजी सृष्टि को उत्पन्न करने के सामर्थ्य व ज्ञान से युक्त हैं। जीवों के कर्मफल और वासना भोग हेतु ब्रह्माजी जगत का सृजन करते हैं। इस प्रकार परमात्मा की नाभि स्वर्ण के समान कल्याणमयी है।

उन हिरण्यनाभ रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १९५ –

ॐ सुतपसे नमः

सुन्दर तप से युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has Glorious Tapas.

बदरिकाश्रमे नरनारायणरूपेण शोभनं तपश्चरति इति सुतपाः अर्थात् बदरिकाश्रम में नर–नारायण रूप से जो सुन्दर तप करते हैं, वे सुतपा हैं। भागवत पुराण के अनुसार भगवान ने सृष्टि के कल्याण हेतु स्वयं नर और नारायण की तरह से दो रूप धारण करके हिमालय स्थित बदरिकाश्रम में तप किया था, इसलिए वे सुतपा कहलाते हैं।

उन सुन्दर तप से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १९६ –

ॐ पद्मनाभाय नमः

सबके हृदयकमल में स्थित प्रभु को नमन।

I salute the one who resides in the heart of all.

हृदयपद्मस्य नाभौ मध्ये प्रकाशनाद् पद्मनाभः अर्थात् सबके हृदयकमल के मध्य में प्रकाशित होने से भगवान पद्मनाभ हैं। समस्त प्राणीमात्र के हृदय रूपी कमल के मध्य में परमात्मा ही जीव की तरह अभिव्यक्त हुए हैं, वे ही 'मैं' की तरह से प्रकाशित हो रहे हैं। अतः उन्हें पद्मनाभ कहा जाता हैं।

सबके हृदय में चेतना रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १९७ –

ॐ प्रजापतये नमः

प्रजापति रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of Creatures.

प्रजानां पतिः पिता प्रजापतिः अर्थात् प्रजाओं के पति अर्थात् पिता होने से प्रजापति हैं। परमात्मा ही समस्त प्रजा को जीवन तथा उनके कर्मो का फल देने वाले हैं। इस प्रकार प्रजा का एक पिता की तरह पालन–पोषण करते हैं, इसलिए वे प्रजापति कहलाते हैं।

उन प्रजापति रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १९८ –

ॐ अमृत्यवे नमः

मृत्यु से रहित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Imperishable.

मृत्युः विनाशः तद् हेतुः वा अस्य न विद्यते इति अमृत्युः अर्थात् भगवान में मृत्यु वा विनाश तथा उसका कारण न होने से वे अमृत्यु हैं। मृत्यु दो प्रकार से होती है, एक स्वतः और दूसरी परतः। परमात्मा में कोई अवयव नहीं होने से उनकी स्वतः मृत्यु नहीं होती है, तथा उनसे पृथक् कुछ है ही नहीं, अतः विनाश के निमित्त रूप अन्य का भी अभाव होने से उनकी परतः मृत्यु भी नहीं होती है। अतः वे अमृत्यु कहलाते हैं।

उन अमृत्यु स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– १९९ –

ॐ सर्वदर्शिने नमः

सबके दृष्टास्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Seer of all.

प्राणिनां कृताकृतं सर्वं पश्यति स्वाभाविकेन बोधेन इति सर्वदृक् अर्थात् अपने स्वाभाविक ज्ञान से प्राणियों के सब कर्म–अकर्म आदि देखते हैं, इसलिए सर्वदृक् हैं। परमात्मा सबके हृदय में साक्षी की तरह से विराजमान हैं, इसलिए सबके हृदय में स्थित अच्छे वा बुरे कर्म के संकल्प तथा संकल्प की अभिव्यक्ति रूप कर्म – इन सब के दृष्टा बनकर जानते हैं। इसलिए वे सर्वदर्शी कहलाते हैं।

उन सर्वदर्शी रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- २०० -

ॐ सिंहाय नमः

सबके विनाशक परमात्मा को नमन।

I salute the one who is the Annihilator of All.

हिनस्ति इति सिंहः अर्थात् हिंसन करने के कारण सिंह हैं। समस्त विनाश और परिवर्तन सृष्टि की अपरिहार्य घटनाएं है। इसके बगैर सृजन सम्भव ही नहीं होता है। जिस समय सब कुछ प्रलय को प्राप्त होता है, तब एक मात्र परमात्मा ही रहते हैं। वे ही समस्त सृष्टि और विनाश के पीछे कारण हैं। अतः वे हनन करनेवाले सिंह कहलाते हैं।

उन सिंह रूप परमात्मा को सादर नमन।